के.मा.शि.सं., मुंबई के पवारखेड़ा केन्द्र में 1 दिसम्बर, 2017 को

"मध्यप्रदेश राज्य में मत्स्य कृषि उद्योग, उत्पाद एवं आय वृद्धि के उपाय"

विषय पर विचार मंथन सत्र का आयोजन

के.मा.शि.सं., मुंबई के पवारखेड़ा केन्द्र में 1 दिसम्बर, 2017 को दोपहर 2.00 बजे से **"मध्यप्रदेश राज्य में मत्स्य कृषि उद्योग, उत्पाद एवं आय वृद्धि के उपाय"** विषय पर विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया । इस महत्वपूर्ण अवसर पर श्री विनोद कुमार, प्रमुख सचिव, मात्स्यिकी (मध्यप्रदेश); श्री ओ. पी. सक्सेना, निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, (म.प्र.); श्री एम. एस. धाकड़, प्रबंध निदेशक, मत्स्य सहकारी संघ (म.प्र.); डा. गोपाल कृष्णा, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. - के.मा.शि.सं. विशेष रूप से उपस्थित थे । इनके साथ ही राज्य के अधिकारीगण, कृषक, उद्यमी, विशेषज्ञ व भा.कृ.अनु.प. - के.मा.शि.सं. के कर्मचारी भी उपस्थित थे ।

भा.कृ.अनु.प. - के.मा.शि.सं., मुंबई के निदेशक डा. गोपाल कृष्णा ने अतिथियों का स्वागत किया । निदेशक महोदय ने श्री विनोद कुमार व श्री सक्सेना जी को धन्यवाद दिया कि उन्होने पवारखेड़ा केन्द्र की भूमि को भा.कृ.अनु.प. - के.मा.शि.सं. के नाम अल्प समय में स्थानान्तरित कराये जाने में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया । उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस स्थानांतरण से केन्द्र का गतिशील विकास संभव हो पाएगा और राज्य की प्रशिक्षण और अनुसंधान की आवश्यकताओं की पूर्ति सक्षमता से हो पाएगी । श्री सक्सेना ने प्रसन्नता व्यक्त कि कि विचार विमर्श सत्र के तुरंत बाद के.मा.शि.सं॰ द्वारा राज्य के 20 अधिकारियों के लिए **"मत्स्य संस्करण"** पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है । उन्होने कहा कि किसानों के लाभ में वृद्धि हेतु इस महत्वपूर्ण पहलू पर भी ध्यान दिए जाने की अत्याधिक आवश्यकता है । श्री धाकड़ ने कहा कि खाद्य उद्योगों को इस प्रकार के उद्यम की ओर आकर्षित किया जा सकता है और कृषि खाद्य उत्पादों के लिए स्वीकृत दिशा निर्देशों का अनुपालन किया जा सकता है ।

प्रमुख सचिव, मात्स्यिकी (म.प्र.) ने अपने वक्तव्य में अधिकारियों और कृषकों को मात्स्यिकी क्षेत्र के उन्नयन हेतु लगन के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया व के.मा.शि.सं., मुंबई और इसके पवारखेड़ा केन्द्र से प्रौद्योगिकी और तकनीकी सहायता प्राप्त करने का सुझाव भी दिया । उन्होने उत्तम **"खाद्य रूपांतरण अनुपात"** के साथ उत्तम परिणाम देने वाली प्रजातियों और उनके उपभेदों के महत्व को रेखांकित किया । इसके साथ ही उन्होने तालाब उत्पादकता को बढ़ाने पर बल दिया जिससे आहार / खाद्य की कीमत को कम किया जा सके।

विचार मंथन सत्र के अगले चरण में किसानों ने मछलियों के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य सामग्री जैसे जलीय पौधे (water hyacinth) व मकई आहार (maize cob) के उपयोग के संबंध में, पिंजड़े में पाली जाने वाली मछलियों के रोगों एवं उनके संभावित उपचार के संबंध में प्रश्न पूछे । डा. बालंगे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मत्स्य संस्करण प्रौद्योगिकी विभाग (PHT), के.मा.शि.सं. ने सुझाव दिया कि संदाय आधार (payment basis) पर **"मत्स्य संस्करण"** में प्रयोग होने वाले मंहगे उपकरण म.प्र. राज्य द्वारा केन्द्रीय सुविधा के रूप में उद्यमियों को उपलब्ध कराए जा सकते हैं । डा. अपर्णा चौधरी, विभागाध्यक्ष, मत्स्य आनुवंशिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी (FGB), के.मा.शि.सं., ने के.मा.शि.सं, मुंबई में उपलब्ध उच्च गुणता सजावटी मत्स्य संवर्धन व दीर्घकाय मीठापानी प्रॉन / कार्प बहुसंवर्धन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों का सुझाव दिया । साथ ही उन्होने हाइब्रिड (hybrid) प्रजातियों और तिलोपिया (tilapia) मछलियों के संवर्धन में सावधानी बरतने की सलाह दी क्योंकि इनके कारण प्राकृतिक प्रजातियाँ लुप्त होने का भय होता है ।

पवारखेड़ा केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सुनील नायक ने म.प्र. के अधिकारियों को केन्द्र का अवलोकन करवाया और गतिविधियों की जानकारी दी।